तित्थयर

वर्ष २२ अंक-११ फरवरी १९९९

जैन भवन

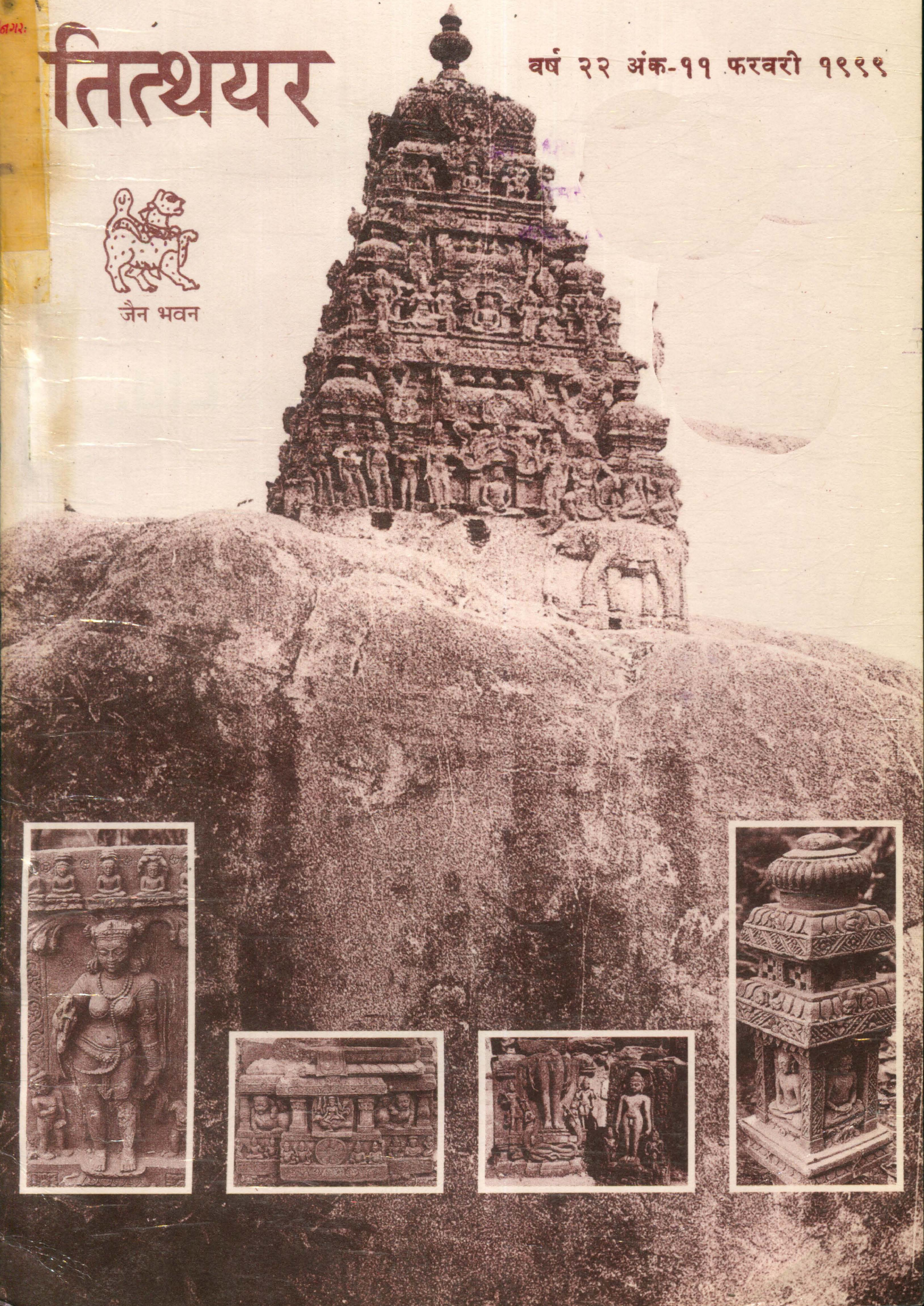

Received 16/04/99

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - ११, फरवरी १९९९

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor, Titthayar, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	महाराज श्रेणिक के परिवारिक	डा° विपिनचन्द कापडिया अनुवाद - भंवरलाल नाहटा	२५७
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	२६३
३.	राजा सम्प्रति	--	२७१
४.	समाचार परिशिष्ट	--	२७५
५.	पाठक दीर्घा	--	२७९

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तियाँ एवं मन्दिर ।

Composed by

COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खण-परिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहम्मि, नाऽऽयरन्ति ममाइयं ॥
– (दश० अ० ६ गा० २२)

ज्ञानी पुरूष, संयम-साधक उपकरणों के लेने और रखने में कहीं भी किसी भी प्रकार का ममत्व नहीं करते । और तो क्या, अपने शरीर तक पर भी ममता नहीं रखते ।

महाराजा श्रेणिक के परिवारिक

डा० विपिनचन्द कापड़िया
अनुवाद - भंवरलाल नाहटा

मगध नरेश महाराजा श्रेणिक अपनी प्रौढ़ावस्था तक बौद्ध रहे बाद में जैन धर्म के आराधक दृढ़समकिती बने। एक वार हिरणी मृगी का शिकार कर उसे तथा उसके बच्चे को तड़पते हुए देख कर बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की जिससे बंधे हुए निकाचित कर्मो से नरकगामी हुए। उस से छुटकारा पाने का मार्ग पूछने पर भगवान महावीर ने कहा यदि काल सौरिक भैसे मारना बन्द करे, तुम्हारी दासी कपिला दान दे अथवा पुणिया श्रावक सामायिक का फल दे तो नरक गति सुधर जायेगी। किन्तु कुएँ मे रह कर भी काल सौरिक भैंसे मारता ही रहा। कपिला कहती है कि यह चाटु चमचा दान देता है मेरा हाथ नही देता तथा पुणिया कहता है कि पूरे राज्य के बदले भी सामायिक का फल नहीं दिया जा सकता। इस घटना के पश्चात् श्रेणिक ने समकित प्राप्त किया था अतः नरक दुख भोगने के पश्चात् आगामी उत्सर्पिणी मे वे पद्मनाभ तीर्थंकर होगे। इस तरह श्रेणिक की जीवात्मा पहले नरक तथा बाद में मोक्षगामी होगी जबकि प्रसन्नचन्द्र राजर्षि के तो एक ही भव में सातवी नरक के बन्ध की अवस्था पाकर उसी मे मोंक्षगामी होते ही देव दुंदुभी बजी।

श्रेणिक तथा उसके कुटुम्बी जनों के विषय में जरा विवरण पूर्वक देखे। निरया वलिया या निरयावलिका श्रुतस्कंध में पाँच उपांगों को समाविष्ट किया है। १ निरयावलिका या कप्पिया कालपिका। काप्पंवडंसिया (कल्पावर्तसिका) ३ पुष्फिया (पुष्फिता)४ पुष्फचूण्यि (पुष्पचूलिका)५ बह्निदशा (वृष्णदशा)। जिसका परिमाण ११०० श्लोक परिमित है।

निरय अर्थात् नरक का जीव और आवलि अथवा श्रेणि। नरक में जाने वाले जीवों की श्रेणी का वर्णन जिस ग्रंथ में हो वह निरयावलिया श्रुत स्कंध है। श्रेणिक और चेलना के पुत्र कूणिय कोणिक की पद्मावती नामक पत्नी की थी। और काली नाम की सौतली माँ थी। काली के काल नामक पुत्र था। उसने गरूड़ व्यूह रचा और कोणिक के साथ रह कर रथ मूसल

युद्ध में भाग लिया। जिसमें एक करोड़ अस्सी लाख मनुष्यों की मृत्यु हुई। चेटक ने उसे एक ही बाण से मार डाला। दूसरे अध्याय में श्रेणिक की पत्नी सुकाली के पुत्र सुकाल की भी उस युद्ध में मृत्यु हुई। अवशिष्ट अन्य आठ पत्नियों के आठ पुत्र भी इसी प्रकार निधन हुए। ये १० पुत्र श्रेणिक की काली सुकाली आदि रानियों के पुत्र थे। कोणिक चेलना का पुत्र था इन्हीं भाइयों की सहायता से श्रेणिक को जेल में डाला जाता है।

कोणिक को हल्ल विहल्ल के पास से, पिता का दिया हुआ दिव्य हार और सेचनक हाथी उसकी पत्नी पद्मावती के लिए चाहिए था। यह माँग होने पर उन्होंने नाना चेडा राजा के पास जाकर शरण ली और वैशाली में रहने लगे। दश भाई हल्ल विहल्ल के सामने युद्ध में उतरते हैं। भगवान महावीर के परमोपासक चेडा महाराज ने १२ अणुव्रत लेकर यह नियम लिया कि एक से अधिक बाण नहीं मारना। कोणिक ने दसों भाईयों को सेनापति बनाया, चेडा महाराजा के अमोघ बाण से दसों मारे गये और नरक में उत्पन्न हुए। चेलना रानी के गर्भ में जब कोणिक था, तब उसको पति के कलेजे का माँस खाने का दोहद उत्पन्न हुआ था। अतः पुत्र जन्मते ही उसने कोणिक को कूड़े में फैंक दिया था। श्रेंणिक उसे वापस ले आया और अंगुली का मवाद चूस कर ठीक किया था। फिर भी वह राज्याधिकारी बनकर पिता को जेल में डाल कर प्रतिदिन एक सौ चाबुक मारता। श्रेणिक वीर वीर कहता। एकदिन, माता ने उसे जन्म के बाद कूड़े में फेंक दिया किन्तु दयालु पिला ने बचाया था यह ज्ञात कर कुठार ले कर बंधन तोड़ते आते हुए को देखकर श्रेणिक ने जहर खाकर आत्म हत्या करली क्यो कि उसने सोचा कि यह मुझे मार डालने के लिए आ रहा है।

कपवडंसिया जो अंतगडदशा का उपांग है उसमें १० अध्ययन हैं इनके नाम पद्म, महापद्म, भद्र, सुभद्र, पद्मभद्र, पद्मसेन, पद्मगुल्म, नलिनीगुल्म, आनन्द और नंदन है। ये दसों अनुक्रम से श्रेणिक राजा के इन काल, सुकाल आदि के पुत्र तथा श्रेणिक के पौत्र है जिनका उल्लेख निरयावली सूत्र में है। ये सभी भगवान महावीर स्वामी का उपदेश श्रवण कर वैराग्य वासित हो दीक्षा ले ११ अंगों के अभ्यास पूर्वक उत्कृष्ट तप संयमपालन कर अनशन संथारा कर सौधर्म देवलोक में उत्पन्न हुए। वहाँ से आयु पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर संयम आराधना कर मोक्ष प्राप्त करेंगे।

आश्चर्य की वात यह कि काल आदि पिता कषाय के वश हो कर नरक

जाते हैं और उनके सभी पुत्र कषाय पर विजय प्राप्त कर सद्गत मुक्त हो जाते हैं। कुटुम्ब के अग्र प्रधान श्रेणिक नरक में जाकर तपश्चात् तीर्थंकर होंगे। उन के पुत्र नरक वासी और पौत्र मोक्ष गामी हुए।

सातवें अंग उपासक दशा में भगवान ने श्रमणोपासक के चरित्र का वर्णन कर आचारधर्म का प्रतिबोध किया है। जब कि आठवें अंतगड़ दसाओं में अणगारसाधु धर्म को स्वीकार कर जो महानुभाव उसी भव में मोक्षगामी है तथा जिन्होंने जीवन के अन्तिम समय में केवलज्ञान प्राप्त कर धर्म देशना दिए बिना मोक्ष गये हैं वे अंतगड़ केवली कहलाए यह अंतगड़ मुख्यतयः गद्य मे रचा हुआ है एवं ८५० श्लोक परिमित है और कहना होगा कि अंतगड़ सूत्र का स्थान ऊँचा है। उत्तर भारत में पर्युषण के मांगलिक दिनों में यह सूत्र स्थानक वासी समाज मे बाँचा जाता है। इसके ८ वर्ग हैं जिन्हे पर्युषण के आठ दिनों मे पूरा किया जाता है।

इस संदर्भ में अणुत्तरोववाइदसाओ (अनुत्तरोपपातिक दशा) के विषय में विचार करें। अनुत्तर अर्थात् जिससे बढ़कर अन्य कोई गति नहीं वैसे उववाइय-उपपातिक देवो के जन्म को उपपात कहा जाता है। उसका अधिकार इस आगम में कहा है। प्रत्येक तीर्थंकरों के समय में १० १० अनुत्तरोपपातिक श्रमणों का चरित्र है जो तीन दिनों में कहा जाता है। प्रथम वर्ग के १० अध्ययन जाति, भयाली, उपजाली, पुरूषसेन, वारिसेन, दीर्घदन्त, विहल्ल और अभयकुमार हैं। ये सभी श्रेणिक के पुत्र हैं जिनमें पहले सातों की माता धारिणी, विहल्ल विहास की माता चेलना और अभयकुमार की माता नंदा है।

दूसरे वर्ग के १३ अध्ययन हैं, यतः दीर्घसेन, महासेन, लष्टदंत, शुद्धदंत, हल्ल, दुम, दुमसेन, महासेन, सिंह, सिंहसेन, महासिंहसेन और पुण्यसेन इन तेरहों के पिता मगधेश्वर श्रेणिक, माता धारिणी तथा दीक्षा पर्याय १३ वर्ष। उपयुक्त दोनों वर्ग के २३ राजकुमार भगवान महावीर के पास मेघकुमार की भाँति दीक्षा लेते हैं। चिरकाल तक निरतिचार चारित्र पालन कर, घोर तपश्चर्या करके एक एक मास का संलेखना संथारा करते हैं। शरीरादि का निर्ममत्व भाव से त्याग कर अनुत्तर विमान में उत्पन्न हुए। वहाँ से च्यवकर महाविदेह में जन्म लेकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होगे।

तीसरे वर्ग में १० अध्ययन हैं, प्रत्येक के पिता सार्थवाह है। प्रत्येक की माँ अलग-अलग किन्तु समान नाम धारण करने वाली भद्रा है। प्रथम ९

को माता दीक्षा दिलाती है । विहल्ल को पिता दीक्षित कराता है । इन में से धन्ना कुमार अणगार बन कर ऐसा अभिगृह लेता है कि दो उपवास (बेला) के पारणे फिर छट्ट करना । रूखा सूखा आहार वाला आयंबिल करना । शरीर ऐसा कृश हो गया कि चलने पर हड्डियाँ खड़खड़ आवाज करती । भगवान ने उसे सभी साधुओं में श्रेष्ठ तपस्वी कहा । धन्ना शालिभद्र से ये अणगार भिन्न (काकंदी) के है । भगवान से आज्ञा लेकर विपुलाचल पर एक मास के संथारे से सर्वार्थ सिद्ध मे गए और वहाँ मे च्यवकर निर्वाणपद प्राप्त करेंगे । देवगण मनुष्य की भाँति माता की कोख से नहीं जन्मते, देव शय्या में जन्मते है । जिनका जन्म अनुत्तर विमान में होता है । वे विमान पाँच है- विजय, वैजयन्त, जयंत, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध । ये सभी देवलोक के अग्रभाग में है । सर्वार्थ सिद्धतो सिद्धशिला से १२ योजन दूर है वहाँ उत्पन्न हुए जीव एकावतारी होते है जो एक अवतार कर के मोक्ष जाते है किन्तु ७ लव का आयुष्यशेष होते (तेतीस सागरोपम बाद) मोक्ष जाते हैं । समवाय में इस प्रकार लिखा है- यहाँ उत्पन्न हुए जीवों का नगर, उद्यान, माता-पिता का वर्णन उपासक दशा की भाँति समझना । फिर यहाँ तपस्वी ज्ञानी उपदेष्टा शासन हितकारी विषय विरत सर्वविरति रूप दया धारक गुर्वादि की सेवा करने वाला रत्नत्रयी का आराधक जिनाज्ञा अनुसारित समाधिवंत उत्तम ध्यान वाले जो प्रभु के शिष्य अनुत्तर विमान में उत्पन्न होकर वहाँ के काम, भोग, उपभोग कर च्यव कर अंत क्रिया कर भवसमाप्त करेगें उनसे दूसरे नौ का अधिकार धन्ना की भाँति ही है । इन सब के अधिकार बड़ी साधुवंदना में आता है । इन दश पुत्रों के नाम (काकंदी के धन्ना से भिन्न है) सुनक्ष, ऋषिदास, पेल्लकपुत्र, रामपुत्र, चंद्रकुमार, पौष्टिकपुत्र, पोटिल और विहल्ल है । नाग की पत्नी सुलसा देवकी के ६ पुत्रों के विषय में उल्लेख है । १० यादवकुमार, कृष्ण की ८ पट्टरानियाँ साम्ब की पत्नी भी मोंक्ष गमन करती है । यह विवरण यहाँ उपलब्ध है ।

नौवा आगम लगभग १९२ श्लोकपरिमित है, इस पर नवांगी वृतिकार अभयदेव सूरि ने १०० श्लोकों की टीका लिखी है । उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि श्रेणिक के २३ पत्नियाँ और २३ पुत्र थे । अंतगड़दसा के सातवें वग्ग में उनकी १३ रानियों की बात है, ८ वें वग्ग में अन्य १० रानियो की बात है । उनमें से प्रथम ४ रानियाँ अनुक्रम से रत्नावली कनकावली लघुसिंह निष्क्रीड़ित और महासिंह निष्क्रीड़ित तप करती है ।

पाँचवी से आठवी सात-सप्तमिका लघु सर्वतोभद्र महासर्वतोभद्र और भद्रोत्तर प्रतिमा का आराधन करती है। नौवी रानी मुक्तावली का तथा दसवी रानी आयंबिल वर्द्धमान तप करती है।

सागर के वंशज ६० हजार पुत्र थे। जैन मान्यतानुसार अष्टापद तीर्थ रक्षा के हेतु प्राण दिये। वसुदेव का जीव नन्दिषेण के भव में वैयाबच्च कर के देव परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ किन्तु अन्त समय में तप के फल स्वरूप स्त्री वल्लभ होने के नियाणे के प्रताप से ७० हजार स्त्रियों का पति हुआ। किन्तु मुक्ति रूपी स्त्री दूर की।

बण्हिदशा (वृष्णिदशा) दिट्ठिवाय के उपांग रूप में निर्दिष्ट है। इसमें वृष्णि वंश के और वासुदेव कृष्ण के ज्येष्ट भ्राता बलदेव के निषढ आदि १२ पुत्रों के नेमिनाथ से दीक्षित हो सर्वार्थसिद्धि में उत्पन्न होने की बात है।

श्रेणिक के कितने ही पारिवारिकजनों के विषय में थोड़ा विवरण देखिए। नंदा का पुत्र अभयकुमार। उसकी बुद्धि और चातुर्य की प्रशंसा एवं उसके जैसा बनने की आकांक्षा की जाती है। नन्दिषेण पूर्व भव में वणिक जैन थे। चौरासी ज्योंनार कराने वाले ब्राह्मण ने इस वणिक की सहायता मांगी। वह पैसा तो लेगा नही इस लिए बचा हुआ सामान उसे दे दिया। लड्डु, घी, चीनी आदि ले गया। इतनी सामग्री का वह क्या करेगा यह विचार कर वह निर्दोष सामग्री साधु साध्वियों को आहारदान में लगा दी। इस पुण्यानुबंधी पुण्य से शुभ अणुवंध योग से प्रबल पुण्य उपार्जन हुआ। जबकि वह ब्राह्मण हाथी हुआ। ८ कन्याओं से विवाह होने का बाद नंदिषेण दीक्षा लेता है। भोगावली कर्म बाकी होने की देवो द्वारा सूचना देने पर भी उसने दीक्षा ली। बारह-बारह वर्ष तक दो-दो चार-चार उपवास किए। अपघात से भी बचे। एक वार धर्मलाभ कहते हुए वेश्या के घर में प्रविष्ट होने पर उसने कहा-यहाँ तो अर्थलाभ से प्रयोजन है। मुनि नंदिषेण ने एक तृण को आँख से स्पर्श कर साढ़े बारह करोड़ की वर्षा कर दी। जाते हुए वेश्या ने उन्हे रोका। देवी वचनो को स्मरण कर निकाचित कर्म भोगने ही होंगे मुनि वेश्या के घर रह गए। वे प्रतिदिन १०-१० व्यक्ति को प्रतिबोध देते फिर भोजन करते। इस प्रकार बारह-बारह वर्ष पर्यन्त प्रवृत रहे। एक दिन ९ व्यक्ति ही प्रतिबोध पाये तो वेश्या ने कहा १० वें आप हैं। सुनते ही तत्काल खड़े होकर निकल पड़े और भगवान महावीर के पास जाकर घोर तपश्चर्या में लग गए।

चैल्लणा रानी के पुत्र थे कुणिक (अजात शत्रु) । विचित्र दोहद से चेल्लाणा ने उसे जन्मते ही पैंक दिया। श्रेणिक ने उसे वापस लाकर अंगुली के घाव किं चूस कर बड़ा किया। श्रेणिक ने उसके दो भाई हल्ल-विहल्ल को सेचनक हाथी और दिव्य हार दिए। कुणिक की पत्नी पद्मावती ने उनसे प्राप्त करने का हठ पकड़ा। मांगने पर न देकर दोनों भ्राता अपने नाना चेटक राजा के पास जाकर वैशाली में शरण लिए। भंयकर युद्ध छिड़ गया। काली वगैरह के १० पुत्र मारे गए। रथ मूशल युद्ध में एक करोड़ ८० लाख मारे गए। पालन करने वाले पिता श्रेणिक को कोणिक ने कैद कर लिया और प्रतिदिन उसको एक सौ चाबुक मरवाता । माता द्वारा सत्य परिस्थितिज्ञातकर कुल्हाड़ा लेकर मुक्त करने आते देख कर श्रेणिक ने आशय न ज्ञात कर आत्मघात कर लिया ।

जब शालिभद्र दीक्षा लेने को तैयार होता है तब भद्रामाता के आयोजित वरघोड़े में श्रेणिक स्वयं छड़ी धारण कर नंगे पाँव शिविका के आगे चला। समकिती होने के कारण वैरागी का अनुमोदन उचित ही था। जैन महाराजा चेटक के चेल्लना, ज्येष्ठा, सुज्येष्ठ आदि पुत्रियाँ थी । ज्येष्ठा और श्रेणिक परस्पर प्रेमी थे । किन्तु अपनी पुत्री जैन धर्मी को ही देने के आग्रह से दोनो के सुरंग मार्ग द्वारा भाग जाने की तैयारी हुई । निश्चित समय में श्रेणिक आता है पर आभूषण की मंजूषा लाने के लिए लौटने पर उसकी छोटी बहिन चेल्लणा के आ पहुँचने पर उसे ही ज्येष्ठा समझ कर उसके साथ पलायन कर जाता है । ज्येष्ठा अपना भाग्य दोष समझ कर दीक्षा ले लेती है ।

चेल्लणा की परीक्षा करने के लिए एक वार जैन मंदिर में रात्रि बिताने के लिए ठहरे हुए साधु के पास वेश्या को भेजता है । सम्यग् साधु दीपक से अपने वस्त्रादि जलाकर केवल लंगोटी धारण कर राख रमा कर अलख निरंजन करता हुआ बाहर निकला तो श्रेणिक अपनी करतूत में असफल होकर जैन के प्रति विशेष श्रद्धान्वित हुआ । समकित प्राप्ति के पश्चात् शंकादि दूषण रहित श्रेणिक राजा प्रतिदिन सुवर्ण के १०८ जप बनवा कर नित्य नए नए स्वस्तिक रचना करता ।

क्रमशः

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

अव इस पौपधव्रत के पांच अतिचार बताता हूं । ग्रन्थकार आचार्यश्री ने लिखा है :

अप्रत्युपेक्षित-अप्रमार्जित-उत्सर्ग-आदाननिक्षेप-संस्तारोपक्रमण-अनादर-स्मृत्यनुपस्थापनानि ॥

मैंने पहले ही कहा था कि पौषधव्रत में श्रावक साधु जैसा बनता है । उसकी दिन-रात की चर्या साधु जैसी होती हैं । श्रावक को पौषध में, जहाँ बैठना हो, उस जगह को अपनी दृष्टि से देख लेनी चाहिए । अच्छी तरह देख लेनी चाहिए । यदि नहीं देखता है तो 'अप्रत्युपेक्षित' नाम का पहला अतिचार लगता है । वैसे, जिस जगह बैठना है, उस जगह को रजोहरण (चरवला) से साफ करनी चाहिए, वस्त्र के अंचल से साफ करनी चाहिए । यदि इस प्रकार प्रमार्जन नहीं करता है, करता है परंतु अच्छी तरह नहीं करता है अथवा थोड़ा प्रमार्जन करता है– थोड़ा नहीं करता है, तो अतिचार 'अप्रमार्जित' नाम का लगता है ।

वैसे, जमीन को दृष्टि से देखे बिना, उस जमीन पर पानी डालता है, मूत्र एवं पुरीष का उत्सर्ग करता है तो 'उत्सर्ग' नाम का अतिचार लगता है । श्रावक को पौषध में, ऐसी जमीन पर पानी-मूत्र-पुरीष का उत्सर्ग करना चाहिए कि जहां छोटे-बड़े जीव न हो । दृष्टि से देखकर ही, यदि जीव नहीं हो, तो ही पानी वगैरह डालना चाहिए ।

वैसे, पौपधव्रत में उपयोगी धर्मोपकरण लेते समय, जमीन पर रखते समय भी (आदान = लेना, निक्षेप = रखना) दृष्टि से एवं चरवले से प्रमार्जन करना चाहिए । यदि नहीं करता है तो ''आदान-निक्षेप'' नाम का अतिचार लगता है ।

पौषधव्रत में सोने के लिए जो वस्त्र बिछाया जाता है उसको 'संस्तारक' कहते हैं । संस्तारक का भी प्रतिलेखन करना चाहिए । जिस जगह संस्तारक बिछाया हो, उस जमीन का भी प्रमार्जन करना चाहिए । यदि यह प्रतिलेखन और प्रमार्जन नहीं करता है तो ''संस्तारक उपक्रमण'' नाम का अतिचार

लग जाता है ।

पौषध में प्रतिलेखन कर के ही संस्तारक का उपयोग करना चाहिए। पौषधशाला का भी प्रमार्जन करना चाहिए। संस्तारक शुद्ध वस्त्र का हो या दर्भ का हो, उसको जमीन पर बिछाकर सोना चाहिए, मकान के बाहर जाना पड़े तो वापस संस्तारक का प्रतिलेखन करना चाहिए। नहीं करें तो अतिचार लगता है।

पौषधव्रत ग्रहण करने के बाद यदि पौषधव्रत के प्रति अनादर रखता है, तो अतिचार लगता है। भूल जाता है कि 'मैंने पोषध पहले किया है या नहीं', तो भी अतिचार लगता है। स्मृतिभ्रंश भी अतिचार है।

इस प्रकार अतिचारों को जानकर, अतिचार नहीं लगे इस प्रकार पौषधव्रत का पालन करना चाहिए। इस प्रकार दोषरहित व्रत का पालन करने से निवृत्तिधर्म के पालन का आनंद प्राप्त होता है। निष्पाप जीवन जीने का आनंद प्राप्त होता है।

ब्रह्मचर्य का पालन :

अब्रह्म-मैथुन बड़ा पाप है। मैथुनवृत्ति पर विजय पाने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। पौषध में आप मन-वचन काया से ब्रह्मचर्य का पालन कर सकते हैं। मैथुनसंज्ञा पर विजय पाना, मनुष्य के लिए सरल तो नहीं है, फिर भी अनिवार्य है।

परिग्रहसंज्ञा पर विजय पाना है :

पौपध में किसी प्रकार का व्यापार नहीं करना है। चूंकि अनादिकालीन परिग्रहसंज्ञा पर विजय पाना है। मैथुनसंज्ञा जैसी ही यह परिग्रहसंज्ञा खतरनाक है। "मुझे अपरिग्रही बनना है," इस भावना के साथ पौषधव्रत करने का है।

उपसंहार :

पौषधव्रत, साधुजीवन का पूर्वाभ्यास है। मन जब निवृत्तिप्रिय बनता है तभी पौषधव्रत करने में आनंद का अनुभव होता है। यदि आनंद का अनुभव नहीं होता है तो पौषधव्रत में भी आप लोग विकथायें करते रहेंगे। निन्दा-रस का आनंद लूटते रहेंगे। निद्रा लेते रहेंगे।

एक विशेष सावधानी रखनी चाहिये।

– पौषध में कषाय नहीं करना, क्रोध नहीं करना, अभिमान नहीं करना, माया कपट नहीं रखना और लोभ नहीं करना। यह महत्व की बात

है । यदि कषाय करोगे तो पौषधव्रत के प्राण ही नष्ट हो जायेंगे । इसलिए हो सके तो मौन के साथ पौषध करें ।

– पौषध में प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन वगैरह क्रियायें अच्छी तरह करना। बड़ी पवित्र हैं ये क्रियायें । विधिपूर्वक ये क्रियायें करनी चाहिए ।

इस प्रकार पौषधव्रत का पालन करते हुए परम निवृत्ति को प्राप्त करें, यही मंगल कामना ।

बारहवें- व्रत के विवेचन से पूर्व अतिथि, बाहरवें अतिथि, संविभाग व्रत संविभाग शब्दों का अर्थ जानना आवश्यक है ।

अतिथि :

जिसको तिथि का, पर्वतिथि का कोई बंधन नहीं होता है, वह अतिथि कहा जाता है । किसी भी दिन जो आपके घर आ सकता है, वह 'अतिथि' होता है ।

'अतिथि' की महिमा मात्र जैन परंपरा में ही है, ऐसा नहीं है । वैदिक और बौद्ध वगैरह धर्मों में भी 'अतिथि' को पूज्य माना गया है । विदेशों के तत्त्वचिंतकों ने भी 'अतिथि' का महत्व बताया है ।

'**मनुस्मृति**' में कहा गया है :

'**न वै स्वयं तदश्नीयादतिथिं यन्न भोजयेत् ।**' जो अतिथि को न खिलाया जाय वह स्वयं भी नहीं खाना चाहिए ।

'**बुद्धिचरित**' में अश्वघोष ने कहा है :

'**आतिथ्यमार्यधर्मो हि स्यादतिथिर्यथा-तथा ।**' अतिथि कैसा भी हो, उसका आतिथ्य करना श्रेष्ठ धर्म है ।

'**अथर्ववेद**' में कहा गया है :

'**कीर्तिं च वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ।**'

जो व्यक्ति अतिथि को भोजन कराने से पहले स्वयं भोजन खा लेता है वह अपने घर की कीर्ति और यश को खा लेता है !

'**शतपद ब्राह्मण**' ग्रन्थ में कहा गया है :

'**तन्न्वेवानवक्लृप्तम् । यो मनुष्येस्वनश्नत्सु पूर्वोऽश्नीयात् ।**'

अतिथि को भोजन कराने से पूर्व स्वयं भोजन कर लेना पूर्णतया अनुचित है ।

'**वाल्मिकी रामायण**' में 'अतिथि' की महत्ता इस प्रकार बतायी है :

यथामृतस्य संप्राप्तिः यथा वर्षमनूदके ।
यथा सदृशदारेषु पुत्रजन्मा प्रजस्य वै ॥

प्रणष्टस्य यथा लाभो यथा हर्षो महोदयः ।
तथैवागमनं मन्ये स्वागतं ते महामुने ॥

जैसे अमृत की संप्राप्ति, जैसे जलहीन स्थान पर वर्षा, जैसे निःसंतान मनुष्य को सदृश पत्नी से पुत्रजन्म, जैसे नष्ट संपत्ति की पुनः प्राप्ति, जैसे हर्ष का अतिरेक, उसी प्रकार मैं आपका आगमन मानता हूं । हे महामुनि ! आपका स्वागत है !

'महाभारत' में वेदव्यास ने कहा है :

चक्षुर्दद्यान्मनो दद्याद् वाचं दद्यात् सुभाषितम् ।
उत्थाय चासनं दद्या देष धर्मः सनातनः ॥
प्रत्युत्थायाभिगमनं कुर्यान्न्यायेन चार्चनम् ॥

घर आए व्यक्तियों को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखे, मन से उनके प्रति उत्तम भाव रखे, मीठे वचन बोले तथा उठकर आसन दे । गृहस्थ का यह सनातन धर्म है । अतिथि की अगवानी करें और यथोचित रीति से आदर–सत्कार करें ।

दक्षिण के तत्त्वचिंतक **'तिरूवल्लुवर'** ने कहा है कि : दरिद्रों में दरिद्र वह है, जो अतिथि का सत्कार न करे !

एक विदेशी प्रसिद्ध कवि **'एमर्सन'** लिखता है :

Happy the man who never puts on face but receives every visiter with that Countenance he has on.

सुखी है वह मनुष्य जो अतिथि को देखकर कभी मुंह नहीं लटका लेता है । अपितु हर अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है ।

अपने जैनधर्म में तो 'अतिथि' को बारह व्रतों में समाविष्ट कर उसका महान् गौरव स्थापित किया है । परंतु बारहवें व्रत में जिस अतिथि का समावेश किया गया है उन अतिथि को कोई सामान्य अभ्यागत नहीं समझना है, वे होते हैं पंच महाव्रतधारी साधु और साध्वी ! साधु और साध्वी का 'संविभाग' करने का होता है । यदि गांव में साधु-साध्वी उपलब्ध नहीं हो तो फिर व्रतधारी श्रावक और श्राविका को 'अतिथि' मानकर, उनका संविभाग करना चाहिए ।

संविभाग :

'संविभाग' शब्द जैन दर्शन का विशिष्ट शब्द है । अतिथि को मात्र भाग नहीं देना है, वि-भाग नहीं देना है...उसका 'संविभाग' करना है ।

'सम्' उपसर्ग यहां 'सम्यग्' अर्थ में है। 'सम्यग्' यानी सुंदर ! अतिथि को भोजन, वस्त्र वगैरह जो कुछ देना है, सुंदर ढंग से देना है। प्रेम से देना है।

'अतिथि संविभाग' व्रतधारी को–

१. उपवास कर,

२. पौषध कर,

३. पारणे के दिन एकासन कर,

४. विनय से साधु-साध्वी को निमंत्रित कर,

५. उनका प्रिय शब्दों से स्वागत कर,

६. आहार-पानी देने का है। और, जो आहार वे ग्रहण करें वही आहार व्रतधारी ग्रहण करता है। वही आहार से वह एकासना करता है। यह है अतिथि-संविभाग व्रत के पालन की पद्धति।

प्रश्न : हमने तो देखा है कि ऐसे व्रतधारी स्त्री-पुरूष, मुनिराज को वे सभी वस्तु लेने का आग्रह करते हैं जो उनको खानी होती है ! मुनिराज की इच्छा नहीं होती है कुछ वस्तु लेने की, फिर भी थोड़ी-थोड़ी लेनी पड़ती है !

महाराजश्री : सही बात है। नहीं लेते हैं तो वे लोग नाराज हो जाते हैं। कहते हैं : 'महाराज सा, आप नहीं लेंगे तो हम खा नहीं पायेंगे...थोड़ा सा भी ले लो ! ले लेते हैं ! यह हम लोगों की करूणाजन्य उदारता होती है। परंतु आप लोगों को चाहिए कि 'सहजता से, स्वाभाविकता से जो आहार मुनिराज ग्रहण करेंगे, वही आहार मैं ग्रहण करूंगा।' ऐसा करने से 'अतिथि संविभाग' व्रत करने का विशेष आनन्द प्राप्त होता है।

इस प्रकार उपवास-पौषध के साथ 'अतिथि संविभाग' भले आप वर्ष में एक या दो बार करें, परंतु उपवास-पौषध के बिना प्रतिदिन अतिथि-संविभाग कर सकते हैं। 'मैं अतिथि का संविभाग कर के ही भोजन करूंगा।' ऐसी प्रतिज्ञावाले स्त्रीपुरूष आज के समय में भी कहीं-कहीं देखने को मिलते हैं। प्राचीनकाल की कहानियों में तो इस प्रकार का व्रत धारण करनेवाले अनेक स्त्री-पुरूष आते हैं। उनमें 'नयसार' नाम के ग्रामपति का उदाहरण श्रेष्ठ है। जो श्रमण भगवान महावीर की ही आत्मा थी ! महावीर बनने की नींव 'नयसार' के जन्म में पड़ी थी-ऐसा कहें तो गलत नहीं होगा।

नयसार और अतिथि संविभाग :

नयसार को एक दिन राजा की ओर से आदेश मिला कि जंगल में जाकर, नौकरों से लकड़ी कटवा कर ले आए। नयसार नौकरों को लेकर

जंगल में गए। जंगल के एक विभाग में उन्होंने अपना 'केम्प' डाल दिया। एक ओर नौकर लोग लकड़ी काटते हैं, दूसरी ओर कुछ नौकर भोजन बना रहे हैं। नयसार अपने केम्प में है। भोजन का समय होता है। नयसार अपने मन में सोचते हैं : 'यदि इस समय कोई तपस्वी-अतिथि आ जाय तो उसको भिक्षा देकर मैं भोजन करूं।

वह केम्प में से बाहर निकला। जंगल में से जहां रास्ता गुजरता था, वहां गया और कोई तपस्वी...मुनि...संतपुरूष का इन्तजार करता हुआं खड़ा रहा। इतने में दूर...दूर कोई मुनिराज को इधर-उधर भटकते देखा। नयसार शीघ्र वहां पहुंचा और मुनिराज को वंदन कर पूछा : 'हे तपस्वी, आप इस जंगल में अकेले कैसे भटक रहे हैं ?'

मुनिराज ने कहा : 'मैं एक सार्थ के साथ था। प्रातः मैं मेरे ज्ञान-ध्यान में निमग्न था, सार्थ चल दिया...मुझे मालूम नहीं हुआ...मैं अकेला चल पड़ा...रास्ता मालूम नहीं था...यहां आ गया !'

'हे महात्मन्, चलिए मेरे साथ। इस जंगल में ही थोड़े दिन के लिए मुझे रहना है, इसलिए भोजनादि तैयार हैं। मेरा भाग्योदय हुआ कि आप जैसे महात्मा मुझे मिल गए। आप मेरे निवास में पधारें, भिक्षा ग्रहण करें। विश्राम करें। दिन ढलते मैं आपको रास्ता बताऊंगा, आप सार्थ से मिल जायेंगे।'

मुनिराज, नयसार के साथ उनके निवास में गए। नयसार ने बहुत भक्तिभाव से मुनिराज को भिक्षा दी। भिक्षा देने के बाद ही नयसार ने भोजन किया। नयसार का यह अतिथि-संविभाग था। चूंकि नयसार को यह तपस्वी-अतिथि मिलने पर अमृत की प्राप्ति जैसा आनंद हुआ था। खोई हुई संपत्ति मिलने पर जैसा हर्ष होता है वैसा हर्ष उसको हुआ था।

नयसार ने मुनिराज को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखा था। मन में मुनिराज के प्रति उत्तम भाव जगे थे। मधुर वचनों से उसने मुनिराज को निमंत्रित किया था और, वृद्धिगत भावों से उसने मुनिराज को भोजन दिया था। यह 'संविभाग' था ! मात्र दान देना संविभाग नहीं है, इस प्रकार देना संविभाग है !

अतिथि के प्रति प्रेमभाव और मधुर वाणी-व्यवहार होना अति आवश्यक है। उनको भोजन, वस्त्र, औषध आदि पूज्यता के श्रेष्ठ भाव के साथ देने से अपूर्व आत्मानंद की प्राप्ति होती है।

मुनिराज ने भोजन कर लिया, विश्राम कर लिया, उसके बाद नयसार ने कहा : 'हे महात्मन्, चलें, मैं आपको रास्ता बताता हूं ।' मुनिराज के साथ नयसार चला । मुनिराज के मन में नयसार के प्रति सद्भाव पैदा हो गया था । सद्व्यवहार से और सद्भाव से दूसरों के हृदय में स्नेहभाव प्रायः पैदा हो जाता है !

प्रश्न : 'प्रायः' क्यों कहा ?

महाराजश्री : दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि उनके साथ आप सद्भावपूर्ण सद्व्यवहार करें, तो भी वे उसका मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं ! उनके हृदय में सद्व्यवहार करनेवाले के प्रति स्नेहभाव पैदा ही नहीं होता है !

अभी-अभी एक सत्य घटना मैंने पढ़ी । एक छोटे शहर की बात है । एक मोहल्ले में, एक छोटे घर में तीन-चार लड़के रहते थे, कॉलेज में पढ़ते थे ।

एकदिन उस मोहल्ले में बर्तन बेचनेवाली एक औरत आयी । वह पुराने कपड़े के बदले में बर्तन देती थी । उन लड़कों के घर में आकर बोली : 'बर्तन लेने हों भाई, तो पुराने कपड़े दो और बर्तन ले लो ।'

एक लड़के ने कहा : 'हमें तो बर्तन नहीं चाहिए, परंतु सामने जो गली है, उस गली में जो पहला घर है, वहां जो औरत रहती है, वह बर्तन लेगी...वहां चली जा ।'

वह औरत चली गई उधर । लड़के हंसने लगे । उन्होंने जिस औरत का घर बताया था, वह औरत झगड़ा करनेवाली थी, दुर्व्यवहार करनेवाली थी। वह बर्तनवाली औरत वहां चली गई । उस औरत ने पुराने कपड़े देकर बर्तन लिए...झगड़ा कर...एक गिलास ज्यादा भी ले लिया ।

वह बर्तनवाली औरत वापस लौटी । वे लड़के बाहर ही खड़े थे । पूछा उन्होंने : 'क्यों तुम्हारा धंधा हुआ ?' औरत ने कहा : 'हां, हुआ धंधा, परंतु उसने एक ग्लास ज्यादा ले लिया !' कह कर वह चली गई ।

दो दिन के बाद वह बर्तनवाली औरत, उन लड़कों के पास गई और पूछा : 'भैया, वह औरत कहां रहने चली गई ? आपको मालूम है क्या ? उसने घर बदल दिया है, और उसके पड़ौसी कोई उसका नया घर बताते नहीं हैं ।'

लड़कों ने पूछा : 'परंतु तुझे उस औरत का क्या काम है ?'

'भाई, उसने जो पुराने कपड़े दिए थे, एक पेन्ट की जेब में से ५०० रुपये निकले हैं ! मुझे वापस लौटाने हैं !'

लड़के चकित रह गए । एक लड़के ने कहा : 'तेरे भाग्य से तुझे ५०० रुपये मिले हैं...तू रख ले, वापस लौटाने की क्या जरूरत है ?' वह औरत बोली : 'नहीं भैया, ये अनीति के रुपये हैं...मैं नहीं रख सकती, भगवान देखता है...भगवान पेट भरने को रोटी देता है...ये रुपये उस औरत को लौटाने ही हैं । आप दया करो...उस औरत का घर खोज़ कर मुझे बताओ ।'

एक लड़के को उस महिला का, झगड़ाखोर महिला का नया घर मालूम था । वह बर्तनवाली के साथ गया । घर बताया । वहां पर वो औरत पड़ौसन के साथ झगड़ा कर रही थी ।

बर्तनवाली औरत ने जाकर कहा : 'बहिन, तुमने जो पुराने कपड़े मुझे दिए थे, उसमें से ये ५०० रुपये निकले हैं, ले लीजिए आप के रुपये ।' उसने ५०० रुपये उस औरत को दे दिए । उस औरत ने न तो बर्तनवाली को धन्यवाद दिया, न पानी भी पिलाया, बल्कि बोली :

'अच्छा किया तूने, मेरे पैसे लौटा दिए, अन्यथा तुझे ये अनीति के रुपये हजम नहीं होते ! तुझे बड़ा नुकसान होता ।'

सुनकर उस कॉलेजियन लड़के का मन खट्टा हो गया । उसने बर्तनवाली को कहा : 'सुना न ? इस स्त्री को पैसे वापस नहीं देने थे...कैसी है यह स्त्री ? धन्यवाद के दो शब्द भी बोलती नहीं है...और ऊपर से...'

बर्तनवाली ने कहा : 'भाई, वह धन्यवाद दे या न दे, मुझे तो भगवान की नजरों में अपराधी नहीं बनना था, दे दिए वापस । चलो यहां से...!'

बर्तनवाली के सद्भाव और मद्व्यवहार का मूल्यांकन वह महिला नहीं कर सकी । होते हैं ऐसे जीव संसार में ।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

विश्व-विजयी का माता को वन्दन

महान सम्प्रति जब घूमता हुआ समस्त पृथ्वीपर विजय प्राप्त करने के वाद मालवाकी ओर आया, तब अपना परिवार अवन्ती में होने से उज्ज्ञयिनी में आकर उसने सोलह हजार राजाओं की समृद्धि-सहित अपनी माता के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। संसारपर विजय प्राप्त करनेवाले अपने महान् पराक्रमी पुत्रको देखकर कौन माता होगी जिसे हर्षोन्माद न हो जायगा? अपने पुत्र के ऐसे महान् पराक्रम को देखकर माता आनन्द विभोर हो गई, किन्तु इसी के साथ-साथ उसके मन में यह विचार भी उत्पन्न हुआ कि –'यद्यपि मेरे पुत्र ने तीनों खण्ड पृथ्वीपर विजय प्राप्तकर सोलह हजार राजाओं को झुका दिया और संसारकी अपूर्व समृद्धि प्राप्तकर वह कृतकृत्य भी हो गया, किन्तु तीनों खण्ड की समृद्धि प्राप्त करनेवाले वासुदेव और प्रतिवासुदेव अवश्य ही अपने पाप का फल भोगने के लिए अधोलोक (नरक-गति) में भ्रमण करते हैं। अन्तिम अजातशत्रु भी तीनों खण्ड के राजाओं से अपनी आधीनता स्वीकार करवा कर वैताढय पर्वत के दर्शन कर आया, किन्तु उसे भी छठी नरक पृथ्वी में पाप के भार से दबकर उतरना ही पड़ा! ओह! विजयी के लिए इस वैताढय का दर्शन ही ऐसा है कि उसे अवश्य नीचे उतरना पड़ता है।

ये ऋद्धि में आसक्त हुए वासुदेव और प्रतिवासुदेव तो डूब ही गए, किन्तु चक्रवर्ती के रूप में छह खण्डों को हस्तगत करनेवाले भी सफल नहीं हो सके। अर्थात् जिन्होंने उस समृद्धि के प्रति त्यागभाव दिखाकर संयम की साधना की, केवल वे ही बच सके हैं। ऐसी दशा में अनेक पञ्चेन्द्रिय प्राणियों की हिंसा से युक्त घोर युद्ध करके लाखों का नाश करते हुए मेरे पुत्र ने शत्रु राजाओं को अपने पराक्रम द्वारा आधीन बनाया, यह तो ठीक ही है, किन्तु मैं इसकी दुर्गति होने देना नहीं चाहती। अतः जिस प्रकार मेरा पुत्र यहाँ दिग्विजयी हुआ है, उसी प्रकार यह परलोक में भी परम्परागत अनन्त सुखका भोक्ता बन सकने के मार्गपर जा सके तो बड़ा अच्छा हो!" इस

प्रकार विचार करती हुई माता पुत्र को अपने चरणों में पड़ा देखकर भी मौन धारण किये रही ।

माताजी ! समस्त भूमण्डल पर विजय प्राप्तकर सोलह हजार राजाओं के साथ तुम्हारे चरणों में यह पुत्र प्रणाम करता है, फिर भी आपको प्रसन्नता क्यों नहीं होती ?''

''पुत्र ! तूने अनेक शत्रु राजाओं को जीतकर अपना सामन्त बना लिया, यह संसार की दृष्टि से तो तूने बहुत अच्छा किया होगा, किन्तु लाखों मनुष्यों की हिंसा के बदले प्राप्त किया हुआ यह राज्य प्राणान्त के समय किसके लिए हितकर सिद्ध हुआ है ? जिससे कि मैं प्रसन्नता प्रकट कर सकूँ ?'' माता ने पुत्र को धर्म की ओर प्रवृत्त करने का प्रयत्न किया ।

''माता ! इतना विशाल समग्र पृथ्वी का राज्य होते हुए भी मेरे लिए यह क्यों हितकर नहीं हो सकता ?''

''तूने लाखों जीवों का संहारकर साम्राज्य बढ़ाया है । पाप की भारी गठरी बाँधी है, किन्तु इस प्रकार केवल पापों की ही गठरी बाँधनेवाले धर्म-रहित मनुष्य अधिकतर इस प्रकार डूब चुके हैं कि जो अभीतक भी ऊपर नहीं उठ सके ।''

''तो क्या संसार पर विजय प्राप्त करनेवाले सभी राजा नरक में डूब जाते होंगे ? क्या वीर पुरूषों को पृथ्वीपर विजय प्राप्त नहीं करना चाहिए ? पृथ्वी तो तलवार के अधीन रहती है ।''

''अवश्य ! वीर पुरूष पृथ्वीपर अवश्य विजय प्राप्त करे और अपनी तलवार बजाकर शत्रु को भयभीत भी करे । अतः हे पुत्र ! तूने तीनों खण्ड पृथ्वीपर विजय प्राप्त की, इससे मैं कुछ अप्रसन्न नहीं हूँ । तेरे पराक्रम से तो मुझे हर्ष ही होता है, किन्तु दुःख इतना ही होता है कि तेरे समान पराक्रम करनेवाले पृथ्वीपर विजय प्राप्त करके भी इस प्रकार अन्धकार में विलीन हो गए हैं, जो कि आज तक फिर प्रकाश में आने के लिए शक्तिमान् नहीं हो सके हैं ।''

''ऐसा कौन पराक्रमी गया है, जरा उसका नाम तो बतलाना, माता ?''

''देखो, संसार के प्रसिद्ध पुरूष राम-लक्ष्मण और रावण हुए, किन्तु इनमें लक्ष्मण ने, नारायण ने और रावण ने तीनों खण्डपर विजय प्राप्तकर

चिरकाल पर्यन्त राज्य किया, किन्तु वे भी जीवहिंसा और राज्यशक्ति के प्रताप से चौथे नरक में गए। परशुरामने सातबार क्षत्रिय हीन पृथ्वी कर दी, किन्तु उन्हें भी नरक के अन्धकार में डूब जाना पड़ा। उनके पश्चात् उन्हें-परशुराम को मारनेवाला आठवाँ सभूम चक्रवर्ती अनन्तानुबन्धी के लोभ कषाय से सातवें नरक में गया।

नेमिनाथ प्रभु के समय में हुए उन्हीं के ज्येष्ट बन्धु श्रीकृष्ण इस भारतवर्ष के अन्तिम वासुदेव तीनों खण्ड के स्वामी जरासन्ध को मारकर भारत के अधिपति हुए, किन्तु उस युद्ध के प्रताप से जरासंध चौथे नरक में गया और कृष्ण तीसरे में। उन्हीं नेमिनाथ प्रभु के शासन में ब्रह्मदत्त नाम का बारहवाँ चक्री हुआ। उसने छहखण्ड पृथ्वीपर विजय प्राप्तकर 'चक्री' के रूप में राज्य भोगा ! किन्तु अन्त में सातसौ वर्षों के पश्चात् वह भी सातवें नरक में गया।

अपने ही वंश में अन्तिम सम्राट मगध के सिंहासन पर प्रतिष्ठित मगधपति बिम्बिसार को इस दुष्ट जीवहिंसा के पाप से पहले नरक में जाना पड़ा है। उनका पुत्र कोणिक-अजातशत्रु तीनों खण्ड जीतकर वैताढय पर्वत तक पहुँच गया था, किन्तु उसे भी छटे नरक में जाना पड़ा। इसलिए बेटा ! अपने पराक्रम का उपयोग इस प्रकार जीवहिंसा में किया जाने से उस राज्य का उपभोग करने के पश्चात् अन्त में उस पाप का दण्ड भी भोगना ही पड़ता है। तू भी आज तीनों खण्डपर विजय प्राप्त कर अपने घर लौटा है, फिर भी तूही बतला कि इस विचार के आनेपर मैं कैसे प्रसन्न हो सकती हूँ ? "माता के इन एक-एक वचन को सम्प्रति ने ध्यान-पूर्वक सुनने के बाद पूछा, तो माता ! मैं किस प्रकार तुम्हें प्रसन्न कर सकता हूँ ?"

"धर्म कार्य करके ! अर्थात् यदि तू नए-नए जिन मन्दिर बनवाकर पुण्य उपार्जन करे, तो अवश्य मुझे प्रसन्नता हो सकती है ! इसके सिवाय मेरा मन सन्तुष्ट नहीं हो सकता।"

"जैन मन्दिरों को बनवाने से क्या लाभ है, माता ?"

"शास्त्रों में उसका अनन्त लाभ बतलाया है। फिर भी दशपूर्वधर श्री आर्य सुहस्तिस्वामी के मुख से मैंने एकबार सुना है कि :-

"काष्ठादीनां जिनावासे, यावन्तः परमाणवः।
तावन्ति वर्ष लक्षाणि, तत्कर्ता स्वर्गभाग् भवेत् ॥"

अर्थात्– जिन मन्दिर में लगे हुए काष्ट-पाषाणादि में जितने परमा

होतें हैं, उतने लाख वर्षोंतक, उस जिन मन्दिर का बनवानेवाला स्वर्गलोक में देवताओं के सुख भोगता है ।"

"माताजी ! परमाणु का आशय क्या है ?"

"हम सूर्य का प्रकाश जब किसी जाली या छिद्रमें से आता देखते हैं, उस तेज या प्रकाश में जो सूक्ष्म रजःकण दिखाई देते हैं, उनसे भी सूक्ष्ममें -सूक्ष्म तीसवें भाग को लौकिक शास्त्र में परमाणु कहते हैं । इसी प्रकार नए मन्दिर बनवाने की अपेक्षा पुराने के जीर्णोद्धार का फल और भी अधिक कहा गया है ।"

"बहुत अधिक का भी कोई परिमाण है अथवा योंही ?"

"नए जिन मन्दिर बनाने की अपेक्षा पुराने का जीर्णोद्धार करवाने से सोलह गुणा अधिक फल प्राप्त होता है । विवेकी पुरूषों ने ऐसा कहा है । जिनका द्रव्य इस पवित्र कार्य में व्यय हुआ है, वही पुरूष संसार में धन्य कहलाया है ।"

किन्तु इन जिन मन्दिरों के बनवाने की इतनी अधिक महिमा क्यों कही गई है ? तुमने इसका इतना अधिक पुण्य बतलाया, इसका भी कोई कारण है ?"

"संसार के पापमय व्यवहार में आत्मा डूबा हुआ ही है । अतः ऐसे कितने ही पाप में डूबे हुए आत्माओं को पाप से मुक्त होने के लिए प्रभु दर्शन कर पवित्र बनानेवाले जिन मन्दिर ही एक धर्म-स्थानक होते हैं । क्योंकि इन जिन मन्दिरों में किसी भी प्रकार की सांसारिक क्रियाएँ नहीं होती । अर्थात् भोजन बनाना, खाण्डना-कूटना, या पीसना, विषय सेवन, जुआ, मदिरापान, खेलकूद, हास्य-विनोद आदि अधर्म के कार्य नहीं हो पाते । जब कि लोगों के स्थान तो इस तरह पापों से परिपूर्ण ही रहते हैं । साथ ही ऐसे धर्म स्थानों में जानेपर चाहे जैसे प्राणी के मन में भी धर्म करने की ही सुबुद्धि उत्पन्न होती है । इन सबका लाभ जिन-मन्दिर बनवाने वाले को प्राप्त होता है, किन्तु ये जिन मन्दिर कषायरहित हो कर ही बनवाने चाहिए । अनेक मन्दिर बनवाने से यदि उसके मन में अभिमान, ईर्ष्या आदि उत्पन्न हो जाय, तो लाभ के बदले उल्टी हानि होती है । इसलिए धर्मकाय सरल भाव से और यथा शक्ति लोकोपकार की भावना रखते हुए ही करना चाहिए ।"

क्रमशः

समाचार परिशिष्ट

आचार्य उमास्वाति और उनकी रचनाओं पर आयोजित अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी

भोगीलाल लहेरचंद इन्स्टीटूयट ऑफ इन्डॉलॉजी पिछले १४ वर्षों से दिल्ली में प्राचीन भारतीय विद्याओं के क्षेत्र में शोध व प्रकाशन के साथ-साथ "प्राकृत भाषा एवं साहित्य" और "जैन-धर्म व दर्शन" के विषय में अनेक व्याख्यान, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं तथा ग्रीष्म व शरतकालीन अध्ययनशालाओं के आयोजन में पूर्ण सक्रियता से लगा हुआ है। इस संस्थान के द्वारा दिनांक ४,५,६ जनवरी/९९ को इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली, में "आ. उमास्वाति और उनकी रचनायें इस विषय पर एक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी।

आ. उमास्वाति विक्रम की चौथी-पाँचवी शती के विद्वान् हैं। उन्होंने संस्कृत भाषा में निबद्ध वैशेषिकसूत्र एवं न्यायसूत्र आदि सूत्र-ग्रन्थों की शैली में रचित तत्वार्थसूत्र ग्रन्थ में जैनधर्म, दर्शन, सिद्धांत और आचार के सभी विषयों को १० अध्यायों में लगभग ३५० सूत्रों में निबद्ध किया है। उनका यह तत्वार्थसूत्र जैन समुदाय के सभी सम्प्रदायों में निर्विवाद रूप से एक अत्यन्त श्रद्धास्पद और प्रामाणिक धर्मग्रन्थ माना जाता है। इस कारण उनके इस ग्रन्थ पर संस्कृत, हिन्दी गुजराती, मराठी, कन्नड़, ढूँढारी (राजस्थानी) तथा अंग्रेजी भाषाओं और बोलियों में १०० से अधिक टीकाएं, भाष्य व अनुवाद अपलब्ध हैं।

भारतीय परम्परा में आ. उमास्वाति के योगदान को स्पष्ट करने के लिए ही यह अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी थी।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात विधिवेत्ता डॉ. एल. एम. सिंघवी ने कहा कि आ. उमास्वाति का तत्वार्थसूत्र सभी धर्मग्रन्थों में एक ग्रन्थराज है। उनका यह ग्रन्थ जैन तत्व ज्ञान, दर्शन, विज्ञान एवं आचार शास्त्र का एक लिखित संविधान है। यह ज्ञान और चारित्र का एक विश्वलेख है। सैद्धांतिक रूप से इसमें सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र इस रत्नत्रयी का विवेचन है। ये तीनों एकत्र मोक्ष के मार्ग का निर्माण करते हैं।

जैन बन्धुओं के विभिन्न साम्प्रदायिक विभाजनों के प्रति गहरा दुःख व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण जैन समाज को एकसूत्रता में ब्रद्ध करनेवाले आ. उमास्वाति का उदाहरण अपने सामने रखते हुए, उनका अनुसरण करना चाहिए, तथा वर्ष २०००। ई. में भगवान् महावीर की जो २६०० वीं जन्मतिथि आ रही है, उस अवसर पर सब लोगों को मिलकर राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सभी स्तरों पर सार्थक आयोजन करने चाहिए।

श्री डी. आर. मेहता, चैयरमेन, सेबी, ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जैनधर्म के महान् आदर्शों को जीवन व्यवहार में लाने की आवश्यकता है।

संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रताप भोगीलाल जी ने सभी विद्वानों और माननीय अतिथियों का स्वागत करते हुए आ. उमास्वाति की रचनाओं के धार्मिक, दार्शनिक, व आध्यात्मिक पक्षों पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

संगोष्ठी के नियोजक प्रो॰ सत्यरंजन बनर्जी ने अपने विषय उपस्थापन के वक्तव्य में उमास्वाति के महत्वपूर्ण योगदान को प्रतिपादित करते हुए इसप्रकार की संगोष्ठीयों के आयोजनों की आवश्यकता की ओर संकेत किया।

इसी सत्र में डॉ. कपिला वात्स्यायन ने अनेकान्त के प्रसंग में हम सब बुद्धिजीवियों को अपनी-अपनी संकीर्णताओं की अंधेरी गलियों से निकलकर सम्पूर्ण भारतीय परम्परा की उदात्त वैचारिक व सांस्कृतिक धरोहर को पुनरूज्जीवित करने का सशक्त संदेश दिया।

संगोष्ठी के समावर्तन सूत्र में मूर्ति कला एवं स्थापत्य के प्रख्यात इतिहासवेत्ता प्रो. एम. ए. ढाकी ने कहा कि आ. उमास्वाति व उनकी रचनायें तथा समग्र जैन परम्परा का निष्पक्ष एवं ऐतिहासिक दृष्टि से सांगोपांग विवेचन गंभीरता से किया जाना चाहिए।

प्रख्यात समालोचक व लेखक डॉ. नामवरसिंह ने इस समावर्तन सूत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि इस परम्परा में ऐसे निष्पक्ष, ऐतिहासिक दृष्टि सम्पन्न, उदारचेता व ऋषितुल्य विद्वानों ने जन्म लिया है, जिनका दर्शन गंगा स्नान के समान पवित्र माना जाता था। हमें किसी भी कीमत पर यह बात भूल नहीं जानी चाहिए कि चाहे आ. उमास्वाति हों, अथवा उपनिषदों के महच्चेता ऋषि, उनके दर्शन, चिंतन व जीवन में, खुले आकाश की भाँति जो खुलापन था, वह हमारी ऐसी सम्पत्ति है, जिसे खोकर हम न केवल दरिद्र हो जायेंगे, अपितु अपनी भारतीयता ही खो बैठेंगे। अतः हमें अपनी दृष्टि, चिंतन, वर्तन और व्यवहार सभी में उस खुलेपन को, जैसे हो वैसे, वापस लाना होगा।

तीन दिनों की इस संगोष्ठी में अमेरिका, फ्राँस तथा जापान के विद्वान प्रतिनिधियों के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारतवर्ष के अनेक विद्वान् प्रतिनिधियों एवं राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय जैन समाज के विभिन्न वर्गों व संस्थानों के अनेक गणमान्य महानुभावों और नेताओं ने अत्यंत सक्रियता से भाग लिया । संगोष्ठी में निम्नलिखित २१ शोधपत्रों का वाचन तथा उनपर गंभीर चर्चा के साथ ४ विशेष व्याख्यान भी हुए ।

Author	Title
Dr. Satya Ranjan Banerjce (Editor : Jain Journal)	Umãsvãti's Indebtedness to the Jain Canons.
Smt. Aruna Anand and Sri V. P. Jain	Samyagdarsana with special reference to the Commentators of Tattvãrtha-sútra- A Critical Appreciation.
Sri Dayanand Bhargava	Some Observations on Tattvãrtha-Sútra (1.7)
Sri Jagat Ram Bhattacharyya	Sources of Meditation in Tattvãrtha-sútra from Jain Canon and Pãtañjala Yoga-sãstra.
Madam Colette Caillat	English translations of the Tattvãrtha-sútra.
M.A. Dhaky	The Works of Umãsvãti.
Sri Padmanabh S. Jaini	Umãsvãti on the Quality of Sukha.
Sri N.M. Kansara	The Yoga of Imãsvãti.
Sri Hampa Nagarajaiah	Apropos of Umãsvãti in Kannada Literature.
Sri Suzuko Ohira	The Jaina Universe in a Profile of Cosmic Man.
Sri Dinanath Sharma	Tattvãrthãdhigama-sútra of Umãsvãti and Jain Cosmology.
Sri Fujinaga Sin	Umãsvãti on Omniscience.
Sri G.L. Suthar	The Epistemological Concepts of Umãsvãti as interpreted by Mahopãdhyãya Yosovijaya Gani in his Tattvãrtha-vivarana : An Appraisal.

Sri Nathmal Tantia	Reflection on the implications of some ideas of Umāsvāti in his Tattvārtha-sútra.
Kristi L. Wiley	Kārmic Bondage and Kasāyas : A Re-examination of "Umāsvāti's Jainism".
कमलेश कुमार जैन	तत्त्वार्थसूत्र की पूज्यपद देवनंदिकृत "सर्वार्थसिद्धिवृत्ति" में उद्धरण
धर्मचन्द जैन	उमास्वातिकृत तत्त्वार्थसूत्र एवं प्रशमरतिप्रकरण
सागरमल जैन	"तत्त्वार्थसूत्र और उसकी परम्परा"
बुधमल शामसुखा	'तत्त्वार्थ में पुनर्जन्म की मान्यता का तात्विक स्वरूप और परामनोविज्ञान की परिकल्पना (Hypothesis)
श्रीमती लता बोथरा सम्पादिका तित्थयर	तत्त्वार्थसूत्र में आत्मा सम्बन्धी तत्त्व

इस संगोष्ठी की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि इसके आयोजन व उसकी अभूतपूर्व सफलता में स्वदेश एवं विदेशों के अनेक जैन संगठन व संस्थाओं का अत्यन्त सक्रिय योगदान प्राप्त हुआ । इन सहयोगी संस्थाओं के नाम निम्नलिखित हैं -

१. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली ।
२. श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जैन ट्रस्ट ।
३. जैन इण्टरनेशनल, अहमदाबाद ।
४. श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर । उ. प्र. ।
५. द जैन अकॉडेमिक फाउण्डेशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका, लॅबॅक, टैक्सस ।
६. श्री पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी ।
७. जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं । राज. ।

विमल प्रकाश जैन
डाइरेक्टर भोगीलाल लहेरचन्द
इन्स्टीटयूट ऑफ इन्डॉलॉजी

पाठक दीर्घा

हम अपने उन सभी प्रबुद्ध पाठक वर्ग को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने तित्थयर के 'पूर्वांचल मे सराक संस्कृति और जैन धर्म' विशेपांक पर हमें पत्र लिखकर हमारा उत्साहवर्धन किया है। हम चाहते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार की पठनीय ऐतिहासिक शोध सामग्री अपने पाठकों को उपलब्ध कराए। पाठक दीर्घा में इस विशेपांक से सम्वन्धित कुछ पत्रों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

चुने हुए विद्वानों के परिश्रम का उपयोग करके आपने सराक जाति, उनकी संस्कृति और जैन धर्म से सम्बन्धित सामग्री को प्रकाश में लाकर बहुत ही महत्वपूर्ण प्रदान किया है। यह अंक सराक जाति के विपय में बहुत ही महत्वपूर्ण एवं एक प्रामाणिक ग्रंथ के रूप में कार्य करेगा। जहाँ से भी सम्भव था वहाँ से प्राचीन सामग्री का संकलन करके इसे एक ऐतिहासिक दस्तावेज बना दिया है यह कोई सामान्य बात नहीं है।

डा° के. आर. चन्द्रा
अहमदाबाद

यह विशेषांक पुरातत्वीय सामग्री से युक्त सप्रमाण/गवेपणा पूर्ण सराक जाति का एक विहंगम इतिहास प्रस्तुत कर रहा है। इसकी प्रचूर सामग्री पढ़ कर मुझे लगा कि दिगम्बर जैन पत्रों में इस प्रकार का प्रयास क्यों नहीं किया गया। लिखा तो गया है सराकों पर परन्तु आपने जो श्रम करके विद्वान लेखकों के शोध आलेखों को आहुत कर संजोया है वह स्तुत्य है।

पं निहाल चन्द जैन प्राचार्य
बीना मध्यप्रदेश

इतनी सुन्दर तित्थयर के लिए आप व संबन्धित व्यक्ति बधाई के पात्र हैं। पत्रिका गागर में सागर हैं। पत्रिका में ज्ञान भरे लेखों से जैन धर्म के बारे में ठोस जानकारी मिलती है। अनेक सदस्यों ने इसे सराहा है।

भारतीय योग निकेतन
दयानन्द विहार, दिल्ली

यह विशेषांक नहीं सराक संस्कृति और जैन धर्म का इतिहास है। सराक संस्कृति की जानकारी सारे देश को उसके द्वारा मिलेगी। ये महत्वपूर्ण है।

मानवमुनि
इंदौर म.प्र.

उत्तम सामग्री को संजोने के लिए आपको धन्यवाद पिछले कुछ वर्षों से सामान्य जैनों मे और जैन साधुओ में सराक क्षेत्रो के प्रति उत्सुकता हुई है। निश्चित रूप से यह विशेषांक सराक जाति को जैन जाति के अंग के रूप में प्रतिष्ठित कर उन्हें मूल धारा में लाएगा।

डा० नन्दलाल जैन
रेवा म.प्रदेश

पूर्वांचल में सराक संस्कृति और जैन धर्म इन विषयों पर इस अंक में संग्रहित सामग्री बहुत ही महत्वपूर्ण, प्रमाणिक एवं संग्रहणीय है। प्रो० कल्याणमल लोढा की शुभाशंसा सर्वथा उचित है।

प्रो विमल प्रकाश जैन
निर्देशक भोगीलाल लहेर-
चन्द इन्स्टीटूयट ऑफ इंडोलांजी

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English		
1. *Bhagavati-sütra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2. James Burges – *The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates [It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya*.]	Price : Rs.	100.00
3. P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4. Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord*		10.00
Hindi		
5. Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani		40.00
6. Ganesh Lalwani – Śraman Samskriti ki Kavitä		20.00
7. Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani		30.00
8. Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani		50.00
9. Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír		60.00
10. Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät		45.00
11. Ganesh Lalwani – Pañcadaśí		100.00
12. Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më		30.00
Bengali		
13. Ganesh Lalwani – Atimukta		40.00
14. Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä		20.00
15. Puran Chand Shyamsukha – Bhagavän Mahävír O Jaina Dharma		15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक) के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable, Quaterly research Journal on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये

वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र घर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office

2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office

28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)
'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa

S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)

Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)

High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore

H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 11

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

February 1999

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225